शीत युद्ध के प्रारंभिक चरण (1945–1953): वैचारिक संघर्ष और शक्ति संतुलन
Early Phase of the Cold War (1945–1953): Ideological Conflict and Balance of Power

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व राजनीति में एक नई शक्ति संरचना उभरी, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ दो महाशक्तियों के रूप में सामने आए। 1945 से 1953 के बीच का काल शीत युद्ध के प्रारंभिक चरण के रूप में जाना जाता है, जिसमें वैचारिक संघर्ष, कूटनीतिक प्रतिस्पर्धा और सैन्य गुटबंदी की नींव पड़ी।

शीत युद्ध की उत्पत्ति के प्रमुख कारणों में वैचारिक भिन्नता, सुरक्षा चिंताएँ और युद्धोत्तर शक्ति शून्य शामिल थे। अमेरिका उदार लोकतंत्र और पूंजीवादी व्यवस्था का समर्थक था, जबकि सोवियत संघ समाजवादी विचारधारा और केंद्रीकृत राज्य व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता था। पूर्वी यूरोप में सोवियत प्रभाव के विस्तार ने पश्चिमी देशों को चिंतित कर दिया।

1947 में ट्रूमैन सिद्धांत की घोषणा ने साम्यवाद के प्रसार को रोकने (Containment) की अमेरिकी नीति को स्पष्ट किया। इसके साथ ही मार्शल योजना के माध्यम से पश्चिमी यूरोप को आर्थिक सहायता प्रदान की गई, जिससे साम्यवादी प्रभाव को सीमित करने का प्रयास किया गया। इसके प्रत्युत्तर में सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोप में अपने नियंत्रण को सुदृढ़ किया और कोमिनफॉर्म की स्थापना की।

1948–49 का बर्लिन संकट शीत युद्ध का पहला बड़ा टकराव था। सोवियत संघ द्वारा पश्चिमी बर्लिन की नाकेबंदी के जवाब में पश्चिमी शक्तियों ने बर्लिन एयरलिफ्ट के माध्यम से आपूर्ति जारी रखी। इस घटना ने यूरोप के विभाजन को स्थायी रूप से स्पष्ट कर दिया। 1949 में NATO की स्थापना और 1955 में वारसा संधि की पृष्ठभूमि इसी प्रारंभिक तनाव में तैयार हुई।

कोरिया युद्ध (1950–1953) शीत युद्ध का पहला प्रत्यक्ष सैन्य संघर्ष था, जिसने शीत युद्ध को वैश्विक आयाम प्रदान किया। इस युद्ध ने यह स्पष्ट किया कि महाशक्तियाँ प्रत्यक्ष युद्ध से बचते हुए परोक्ष युद्ध (Proxy War) की रणनीति अपनाएँगी।

इतिहासलेखन में पारंपरिक दृष्टिकोण सोवियत विस्तारवाद को शीत युद्ध का मुख्य कारण मानता है, जबकि संशोधनवादी इतिहासकार अमेरिकी आर्थिक और सामरिक नीतियों को उत्तरदायी ठहराते हैं। उत्तर-संशोधनवादी दृष्टिकोण के अनुसार शीत युद्ध परस्पर अविश्वास, सुरक्षा दुविधा और शक्ति राजनीति का संयुक्त परिणाम था।

निष्कर्षतः शीत युद्ध का प्रारंभिक चरण द्विध्रुवीय विश्व व्यवस्था की स्थापना का काल था, जिसने अंतरराष्ट्रीय संबंधों को वैचारिक प्रतिस्पर्धा और शक्ति संतुलन के ढाँचे में परिवर्तित कर दिया।